Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

मोनपा जनजाति में प्रचलित लोकविश्वास
(शव काटनेवाला आदमी उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

दिगंत बोरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
जे.डी.एच.जी. महाविद्यालय
बोकाखाट, असम, भारत।

Article Info

Volume 3, Issue 5

Page Number: 44-47

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 01 Oct 2020

Published : 08 Oct 2020

शोध सारांशिका : – सभी समाज में धर्म, जीव, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित लोक-विश्वास युगों-युगों से चली आ रही हैं। लोकविश्वास लोक-संस्कृति का ही एक अंग है। जन जीवन में बहुत से ऐसे विश्वास जड़े जमाए हुए हैं, जिनके फल-फूल-पत्र के रूप में बहुत सी प्रथा-परंपराएँ विकसित होती हैं। मोनपा जनजाति अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख जनजातियों में से एक है। मोनपा जनजाति के लोग अपनी सामाजिक परंपरा का पालन करनेवाले विनम्र किंतु अपने धर्म पर दृढ़ आस्था रखने वाले लोग है। अरुणाचल प्रदेश की मोनपा जनजाति के लोग सबसे अधिक धर्म पर आस्था रखते हैं। किसी बच्चें के जन्म पर लामा को जन्म कुंडली दिखाकर ही उसका नामकरण करते है। मोनपा जनजाति में कुंडली का पाठ केवल नामकरण में ही नहीं किया जाता है, किसी के सत्कार के लिए भी जन्म कुंडली देखा जाता है। मोनपा समाज के लोग व्यक्ति के पूनर्जन्म पर विश्वास रखते है। उन लोगों क विश्वास है कि व्यक्ति का पृथ्वी पर जन्म लेना पूर्वजन्म का फल है। उसी पूण्य पर आस्था रखते हुए दारगे नरबू आजीवन शव का सत्कार करते रहते है। इसके अतिरिक्त वे लोग भूत-प्रेत, आत्मा-प्रेतात्मा आदि पर भी विश्वास रखते है। ज्यादातर लोकविश्वास जन्म, मृत्यु, कर्मफल, मुक्ति आदि से ही संबंधित है।

बीज शब्द : पूर्वजन्म, भाग्यवाद, लोक-संस्कृति, लोक-विश्वास, मोनपा जनजाति, बौद्ध धर्म आदि

प्रस्तावना : – लोक-विश्वास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। ब्रह्मांड में यावत् वस्तुएँ दृष्टिगोचर होती है, इस जगत में जितनी वस्तुएँ उपलब्ध होती है, उनमें से प्रत्येक के संबंध में लोक-विश्वास निश्चित रूप से प्रचलित है। सभी समाज में धर्म, जीव, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित लोक-विश्वास युगों-युगों से चली आ रही हैं। इन लोक-विश्वासों के मूल में मनुष्य के अलौकिक शक्ति के प्रति डर, श्रद्धा और दीर्घ जीवन लाभ की आशा प्रमुख हैं। आदिम समय में बड़े वृक्ष, पत्थर आदि

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

को डर की दृष्टि से देखा जाता था, इसी के आधार पर समाज में बहुत सारी धारणाएँ प्रचलित हो गयी थी, जिसे बाद में लोक-विश्वास के रूप में मान्यता मिली । लोक-विश्वास और अंधविश्वास दोनों शब्द एक दूसरे के ही पर्याय है। अंधविश्वास शब्द अंग्रेजी के 'Superstition' का हिंदी पर्याय है, 'Superstition' के पर्याय ग्रीक शब्द 'deisidaimonia' का अर्थ है 'अलौकिक शक्ति प्रति डर'। फिर भी लोक-विश्वास और अंधविश्वास में थोड़ी बहुत अंतर है। लोक-विश्वास युक्तिसंगत होते हैं, परंतु अंधविश्वास में कोई तर्क नहीं होते है। फिर भी युगों-युगों से प्रचलित होने के कारण बहुत सारी अंधविश्वास भी लोक-विश्वास में रूपांतरित हो जाती है। जैसे- बारिश का न आना सुखा पड़ना परिस्थितिगत है। परंतु लोक में विश्वास है कि मेढक की विवाह करने से बारिश आयेगी। यह एक अंधविश्वास है कि मेढक की विवाह आयोजित करने से बारिश आयेगी। परंतु प्राचीन काल से प्रचलित रहने के कारण यह आज लोक-विश्वास में परिवर्तित हो गयी है। प्रत्येक समाज की अपनी कुछ मान्यताएँ होती हैं, तदनुरूप उनके विश्वास होते हैं । उन विश्वासों के अनुसार ही जीवन चलते है ।

डॉ. हरीशकुमार शर्मा लिखते है - "जन विश्वास जन जीवन के आधार है । यह लोक जीवन के सामान्य निकष एवं लोक-संस्कृति के आवश्यक अंग है । जन जीवन में बहुत से ऐसे विश्वास जड़े जमाए हुए हैं, जिनके फल-फूल-पत्र के रूप में बहुत सी प्रथा-परंपराएँ विकसित होती हैं ।"

डॉ. बलदेव उपाध्याय के अनुसार – लोक-विश्वास का साम्राज्य इस विश्व में सर्वत्र विराजमान है। ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ के निवासियों के जीवन को लोकविश्वास प्रभावित नहीं करता है । शिक्षित-अशिक्षित, सभ्य-असभ्य, बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष ऐसा कोई प्राणी दृष्टिगोचर नहीं होता जो अपने जीवन में इन लोक-विश्वासों की उपयोगिता का अनुभव नहीं करता । साधारण विश्वास है कि भारत के ही निवासियों की दृढ़ मान्यता इन पर है । परंतु विदेशों में अमेरिका तथा यूरोप में, अफ्रीका तथा एशिया में भी इनकी प्रमुख व्यापकता देखकर आलोचकों को नितांत आश्चर्य होता हैं।"

मूल विषय :

शव काटनेवाला आदमी उपन्यास में हमें मोनपा जनसमूदाय में प्रचलित लोक-विश्वासों को देखने को मिलते है । विश्वासों के स्वरूप निर्धारण में धर्म का बहुत बड़ा योगदान होती है और बहुत से विश्वासों का आधार धार्मिक मान्यताएँ ही होती हैं । शव काटनेवाला आदमी उपन्यास का आधार मोनपा जनजाति है । इस जनजाति के लोग धर्मनिष्ठ, अपने विश्वासों के प्रति दृढ़, सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं का अनुपालन करने वाले हैं । उपन्यास आधार पर मोनपा जनजाति में प्रचलित जो लोक-विश्वास उभरकर सामने आते हैं, उनको संक्षेप में निम्नबिंदुओं में देख सकते हैं –

भूत-प्रेत :

भूत-प्रेत संबंधी बाते ग्रामीण समाज के लोगों के बीच प्रायः प्रचलित है । इस उपन्यास में भूत-प्रेत संबंधी कोई बाते सामने आये हैं । घुरवा गाँव के पास जहाँ शव का सत्कार किया जाता है, वहाँ पर भूत-प्रेत, पिशाच आदि का निवास है । इन भूत-प्रेतों को लोगों ने दिन में भी देखा है। इन भूत-प्रेत, पिशाच से बचने के लिए वहाँ पर एक मने स्तुप का निर्माण किया जाता है । "वहीं पर एक स्तुपमने का निर्माण भी किया गया था ताकिवह स्थान भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि से आक्रांत न हो सके । मगर मने रहने के बावजुद भी कहा जाता है कि वह स्थान भूत-प्रेत आदि का अड्डा बन चुका है । 'ऊँ मने पेमे हूँ' मंत्र जिस शिलापर लिखा हुआ है वहाँ पर दिन में ही शव काटने के लिए आदमी के न जाने पर भूत-प्रेत ताश निकालकर

जुआ खेलने बेठ जाते है । .....गलती से भी कई आदमी अकेले उस तरफ नहीं जाता, जब भी जाना होता है, समूह बनाकर लोग जाते हैं । 'ऊँ मने पेमे हूँ' मंत्र पढ़ते हुए ।"[5]

लोगों की यह भी मानना है किआऊ थांपा की बेटी रिजोम्बा के गूँगी और मंद बुद्धि होने का कारण भी वहाँ के भूत-प्रेत ही है । "जिस समय आऊ थांपा उन मृतकों के शवों को काटकर नदी में बहा रहा था, उसी समय लड़की का जन्म होने के कारण उन सारी प्रेतात्माओं का प्रभाव पड़ने के कारण वह मंद बुद्धि वाली बन गयी । "[6]

सभी समाज में इस तरह की मान्यता प्रचलित है । जब भी किसी व्यक्ति का कोई अशुभ होता है उसमें किसी बुरी आत्मा या भूत-प्रेत का प्रभाव मानकर उस बुरी आत्मा को दूर करने का उपाय किया जाता है । चीनी हमले में अपने दोस्त, प्रेमिका को खोकर दारगे नरबु पागल हो जाता है । यहाँ तक कि अपने माँ की हत्या कर देता । इस्के पीछे लोग किसी बुरी आत्मा का प्रभाव मानते है । "युद्ध के समय इतनी मारा-मारी, इतने मृतक-मृतकों की प्रेतात्माएँ, चारों तरफ सिर्फ केन(अशुभ शक्ति, भूत-प्रेत), वहीं केन आजांग दारगे के भीतर समा गया था । तुम्हारा आजांग पागल हो गया था । उसके लिए मामा-मामी ने कितने पूजा-पाठ किये, मगर उसका केन दूर नहीं हुआ । उसी केन के प्रभाव में एक दिन मामी को लाश समझकर काट डाला।" [7]

शकुन-अपशकुन :

शकुन-अपशकुन संबंधी मान्यताएँ सभी समाजों में होती है । शव काटनेवाला आदमी उपन्यास में मोनपा समाज में प्रचलित शकुन-अपशकुन संबंधी विचार देखने को मिलते है ।

आँख का फड़कना भी शुभ-अशुभ दोनों तरह के परिणाम होते है । उपन्यास एक स्थान में रिजोम्बा दारगे से कहती है -"मेरी दायी आँख फड़क रही है । माँ के मरने से पहले भी मेरी दायी आँख इसी तरह फड़क रही थी ।"[8]

कुत्तों का रात में रोना भी अशुभ माना जाता है । इस उपन्यास में रोने के स्थान पर कुत्तों का भौंकना भी अशुभ माना गया है । "गाँव के बाहर रात के अंधेरे को चीरकर कुत्तों के सामूहिक रूप से भौंकने की आवाज के पीछे किसी भयानक घटना का पूर्व संकेत महसूस होने लगा और उसका दिन जोर-जोर से धड़कने लगा ।"[9]

सपने के भीस शुभ–अशुभ फल देने के विशय में समाज में लोकविश्वास प्रचलित हैं। कुछ स्वप्न सुफलदायक और कुछ स्वप्न अशुभ फलदायक माने जाते हैं । चीन के लड़ाई के समय अपने परिवार से बिछड-अने से पहले एक ऐसा ही स्वप्न देखता है – "बीच-बीच में सपने देखा रहा था, अजीब सपने.. भयानक सपने- रिजोम्बा आसमान में उड़ती हुई जा रही है और वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ रहा है । रिजोम्बा से न जानेके लिए कह रहा है, मगर उसके गले से आवाज नहीं निकल रही है .... जिग्मे को बुखार है..... सोती हुई जगह से वह दोनों प्रेतात्माओं को देख रहा है।"[10]

पूर्वजन्म एवं भाग्यवाद :

मोनपा लोग बोद्ध धर्म के अनुयायी हैं । बोद्ध धर्म पुनर्जन्म पर विश्वास करता हैं । शव काटनेवाला आदमी उपन्यास के नायिका रिनचिन जोम्बा जो कि बाद में पूर्णता प्राप्त करती है और आने बनती है । वह कई जन्मों की साधना के पश्चात इस जन्म में पूर्णता को प्राप्त करती है और मोक्ष पाती है । पिछले जन्म में तिब्बत के छारिंग गोम्पा की मठाधिकारी रिनचिन जोम्बा को इस जन्म में दलाई लामा बचपन में एक ही दृष्टि से पहचान लेते हैं और अंततः उसका आने सांगे के रूप में भविष्य सुनिश्चित होता है । किंतु इस जन्म में वह मृत्यु से पूर्व ही सारी व्यवस्थाएँ करने के बाद अपने अनुयायियों

को बता देती है कि अब पुनः पृथ्वी पर उसका जन्म नहीं होगा । "आने सांगे ने सभी लोगों को बता दिया कि उसका पृथ्वी पर यह आखिरी जन्म था, इस मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा कईपेमे में जाने वाली थी अर्थात उसकी आत्मा को निर्वाण प्राप्त होनेवाली थी । इसलिए उसकी मृत्यु के बाद उसने फिर कहाँ जन्म लिया है, इसके बारे में खोजबीन कर किसी को गोम्पा का मठाधिकारी बनाने की आवश्यकता नहीं है।.....इसलिए अस्थायी मठाधिकारी चुनकर उसके माध्यम से नयी रिम्पोछे ने कहाँ जन्म लिया है, इस बात का पता लगाकर शिक्षा-दीक्षा नये सिरे से देकर फिर गोम्पा में बिठाने की जरूरत नहीं है ।"[11]

इतना ही नहीं आने सांगे ने अपने बचपन के प्रेमी दारगे नरबू से आने सांगे नोरजोलम का जन्म-जन्मांतर का संबंध बताकर वह अंतिम समय में उपस्थित जनों के समक्ष यह रहस्य खोल देती है कि -"कई जन्मों तक तुमने मेरी भक्ति की, मेरे कुत्ते के रूप में, मेरा सामान उठाने वाले के रूप में, मेरे भृत्य के रूप में और अंत में मेरी प्रेमी और शव सत्कार करने वाले थांपा के रूप में । तुम्हारा भी इस धरती पर यह आखिरी जन्म था । मेरा शव सत्कार करने के बाद तुम भी इस धरती से मुक्ति पाकर कईपेमे की यात्रा करोगे।"[12]

पुनर्जन्म के अलावा मोनपा समाज के लोग भाग्यवाद में भी विश्वास करते है । मोनपा लोग मानते है कि बहुत कुछ पहले से ही भाग्यमें तय होकर सभी व्यक्ति का जन्म पृथ्वी में होते हैं । विभिन्न कठिन परिस्थितियों में लोग भगवान का मर्जी कहकर अपने मन को समझाने का प्रयास करते है । जब दारगे नरबू अपने मातृ का हत्या करते है । मातृहत्या से ग्रस्त दारगे को आने सांगे नोरजोलम सांत्वना देती है कि – "सब अपने कर्मों का फल होता है । दिल दुखाने से फायदा नहीं होगा ।"[13]

इस तरह निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि मोनपा समाज में अनेक लोकविश्वास प्रचलन में है। मोनपा जनजाति के लोग पूर्वजन्म या भाग्यवाद पर विश्वास रखते है । उन लोगों की मान्यताएँ है कि मनुष्य जीवन में जो भी कार्य घटित होती सब मनुष्य के कर्मों का ही फल है । इसके अतिरिक्त वे लोग भूत-प्रेत, आत्मा-प्रेतात्मा आदि पर भी विश्वास रखते है । मोनपा जनजाति के लोगों में मान्यताएँ है कि मनुष्य कई जन्म लेते है और अपने पूर्वजन्मों के कर्मों का फल उसे परवर्ती जीवन में भोगना ही पड़ता है । उन लोगों में मान्यताएँ है कि किसी व्यक्ति में मृत शरीर को एक सौ आठ टुकड़ों में काटकर नदी में बहाने से ही मृतक के आत्मा को स्वर्ग यानि मुक्ति मिलती है । इस तरह देखते है कि मोनपा जनजाति में अनेक लोकविश्वास प्रचलित है । ज्यादातर लोकविश्वास जन्म, मृत्यु, कर्मफल, मुक्ति आदि से ही संबंधित है ।

संदर्भ सूची :

1. शव काटनेवाला आदमी, येसे दोरजे थोंगछी,, पृष्ठ – 29
2. वही, पृष्ठ – 46
3. वही, पृष्ठ – 224
4. वही, पृष्ठ – 111
5. वही, पृष्ठ – 156
6. वही, पृष्ठ – 138
7. वही, पृष्ठ – 264-265
8. वही, पृष्ठ – 266
9. वही, पृष्ठ – 106